ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | JAN - 2021

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

''प्रवासी कथा साहित्य और स्त्री''

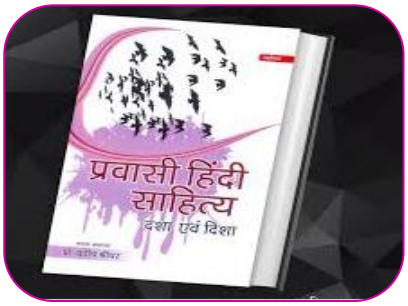

डॉ. गफार सिकंदर मोमीन

ऐसा माना जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, फिर चाहे वह भारतीय समाज हो या अपनाए हुए देश का समाज हो। प्रवासी भारतीयों की सोच भारत में हो रही गतिविधियों से भी संचालित होती है और यह संचालित सोच प्रवासी लेखन में बखूबी दिखाई भी देती है। प्रवासी कथा साहित्य जिसका रंग रूप भारत के पाठकों के लिए एक नयेपन का बोध देता है, सबसे बड़ा कारण है। प्रवासी कथा साहित्य में अपने अपनाए हुए देश के परिवेश, संघर्ष, विशिष्टताओं, रिश्तों और उपलब्धियों पर जाने माने प्रवासी कथाकारों ने अपने लेखन के द्वारा एक भिन्न समाज से परिचय करवाया है। विषय समाज की ठोस समस्याओं से जुड़े होते हैं, और नारी चरित्रों एवं परिवेश के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और अन्याय का अनावरण भी किया जाता है। प्रवासी के लिए यह आसान नहीं होता कि वह अपने अपनाए हुए देश की संस्कृति, सभ्यता और रीति—रिवाज से पूरी तरह जुड़ पाए। उनकी जड़े अपनी मातृभूमि, संस्कारों एवं भाषा से जुड़ी होती हैं।

जहाँ तक स्त्री की बात आती है तो सभी देशों और धर्मों में नारी का रूतबा हमेशा से ही दोयम दर्जे का रहा है। जो प्रवासी रचनाकारों की कथाओं में भी झलकता है। प्रवासी कथा साहित्यकारों में ऐसे बहुत से नाम हैं जिनकी रचनाओं को पढ़कर बखूबी अनुमान लगाया जा सकता है कि आज भी विदेशों में रहते हुए भी वे दुनिया को भारतीय चश्में से ही देखते हैं। इसीलिए उनका लेखन नएपन के बावजूद भी पाठकों के दिल के काफी करीब होता है और मन को भी छू जाता है। अमेरिका में विगत २५ वर्षों से रह रही चर्चित कथाकार सुधा ओम ढींगरा का कहानी संग्रह 'कौन सी जमीन अपनी' मैं यह कहानी क्षितिज से परे पाठक को वास्तव में सोचने पर मजबूर कर देती है कि औरत ही हमेशा त्याग की मूर्ति बनी रहे, पुरूष चाहे भारत की जमीन पर रहता या विदेशों की जमीन पर, कहानी की नायिका सारंगी जो सिर्फ सत्रह सालकी उम्र में अपने पति सुलभ के साथ कैनेडी एयरपोर्ट पर डरी सहमी सी उतरी थी, और अमेरिका में पहले ही दिन उसके पीएच.डी. उम्मीदवार पति ने उसे बेवकूफ कह कर पुकारा था, और चार, पढ़ें—लिखे और अच्छे कैरियर वाले बच्चों की माँ होने के बावजूद चालीस साल तक उसका पति उसे बेवकूफ कहकर पुकारता रहा। सारंगी त्याग और सहिष्णुता की देवी बनी सारे कर्तव्यों को चुपचाप निभाती रही। अंत में वह फैसला करती है कि उसे अपने पति को तलाक देना होगा, उसका पति अभी भी चालीस साल पहले की ही मानसिकता में जी रहा है। दसवीं पास सारंगी जिसने हर दिन पराये देश में संघर्ष किया, सोच और समझ दोनों में ही वह बहुत आगे निकल गई। वह अब और अपने पति से जुड़ी नहीं रह सकती है। उसकी प्राथमिकताएँ बदल गई हैं। सारी जिम्मेदारी का निर्वाह करने के बाद आज वो

आखिरकार हिम्मत जुटा पायी है कि अपने आसमान की खोज उसे स्वयं ही करनी होगी। जहाँ वो उम्र के पड़ाव को भी पछाड़ सकती है।

चूंकि कोई भी कहानी रिश्तों और समस्याओं की तर्क संगत प्रस्तुति होती है, इसी कारण कहानी में समस्याओं का हल प्रस्तुत करने के लिए लेखिका ने विदेशों में रह रहे भारतीयों खासतौर से महिलाओं के बारे में एक गलतफहमी को दूर करने का सफल प्रयास किया है। अमेरिका की प्रसिद्ध लेखिका रचना श्रीवास्तव जी को विदेश जाकर जो माहौल दिखा उसमें वह कहती हैं कि हम स्त्रियों की दशा थोड़ी कष्टप्रद ही होती है। भारतीय संस्कार और यहाँ के वातावरण में तालमेल बैठाना कठिन होता है।

बहुत समय लगता है अपने आपको इस माहौल में ढालने के लिए, कभी किसी महिला का दर्द शब्दों में ढलकर कविता या कहानी का रूप ले लेता है। भारतीय समाज और विदेशी समाज की धारणाएँ अलग होते हुए भी यहाँ भी पुरूष सिर्फ अपने लिए ही जीता है। इसकी मिसाल उन की एक कहानी पार्किंग है जिसमें स्त्री पात्रों के माध्यम से रचना जी ने विदेशी समाज और भारतीय समाज की नारियों के रिश्तों के प्रति सोच और त्याग को एक जैसा ही दर्शाया है, और पुरूषों की स्वार्थी मानसिकता को भी नायिका जूलिया का रूखा व्यवहार स्नेह को तब समझ आता है जब जूलिया उसे अपनी आपबीती सुनाती है कि किस प्रकार वह अपने पति के हाथों ही छली गई है। बेटे के एक्सीडेण्ट ने उसे और भी तोड़ दिया है। परन्तु वह फिर भी जीती है, बेटे की खातिर। परिवेश कोई भी हो आज भी नारी ही चुपचाप सहती है, परिवार और बच्चों की खातिर। अमेरिका में तीस वर्षों से प्रवासी होते हुए भी सुषम बेदी जो भारतीय समाज की संस्कृति और रीति—रिवाजों को भुला नहीं पाई हैं, जहाँ आज भी स्त्री हर रस्म—रिवाज को निभाने में पूरा सहयोग करती है। सुषम बेदी जी की कहानी अवसान में नायक शंकर अपने दोस्त दिवाकर का अंतिम संस्कार हिन्दू रीति —रिवाज से करना चाहता है, पर उसकी अमेरिकी पत्नी हेलन चर्च में ही सारी औपचारिकताएँ पूरी करना चाहती हैं। यहाँ नारी का दूसरा रूप दर्शाया है जो पार्किंग कहानी की नायिका के बिल्कुल विपरीत है।

कहानी में हेलन शंकर का साथ न देकर जिद पर अड़ी है। जिसके चलते शंकर पादरी क्रिया खत्म होते ही गीता के श्लोकोच्चारण से अपने मित्र के अंतिम संस्कार की क्रिया को पूर्ण करता है। फिर वह अपने को बहुत संयत और हल्का महसूस करता है।

ब्रिटेन की शैल अग्रवाल की कहानी वापसी में परंपरा तथा आधुनिकता के अन्तर्द्वन्द्व में फँसी नायिका पम्मी अपने घर परिवार की मान—मर्यादा के लिए अपनी खुशियों तथा आकांक्षाओं का गला घोट देती है। नारी को फिर से त्याग की मूर्ति दिखाने का प्रयत्न किया गया है। उसके हिसाब से हित के लिए लिया गया निर्णय सौदा नहीं त्याग होता है और वह कहती है कि मैं ही क्या हमारे यहाँ तो हजारों पम्मियाँ सदियों से यही करती आ रही हैं। नारी हित की बातें करने वाले इस देश में बस यही तो होता आया है। नारी का एक विश्व प्रसिद्ध रूप कर्मठता का भी है, चाहे देशी धरती या विदेशी महिला चाहें, तो अपनी मेहनत और लगन से कुछ भी हासिल कर सकती हैं। इस संदर्भ में लंदन में रह रही उषा राजे सक्सेना की कहानी 'बीमा बीस्माट' एक नए कथानक से पाठकों को परिचित कराती है। कहानी एक शिक्षिका द्वारा अर्द्धविक्षिप्त बालक 'बीमाबीस्माट' को एक जिम्मेवार ब्रिटिश नागरिक बनाने कड़ी मेहनत, लगन, और समर्पण को प्रस्तुत करती है।

प्रवासी कथाकारों ने अपने साहित्य के जरिए स्त्री के हर रूप को शब्दों में बाँध बारीकी से दर्शाने की बड़ी ही ईमानदारी पूर्वक कोशिश की है। अमेरिका की ही एक और कहानीकार पुष्पा सक्सेना जी की कहानी 'विकल्प कोई नहीं' में माँ को बेटे के चले जाने के बाद दर्द को छिपाकर सिर्फ बहू की आने वाली लंबी जिन्दगी के बारे में सोचकर बहू का बेटी की तरह कन्यादान करना और बहू का अतीत से बाहर न आ पाना बारीकी से दिखाया गया है।

केनेडा की जानी मानी कथा लेखिका सुदर्शन प्रियदर्शिनी जी ने अपनी कहानी धूप के माध्यम से नारी के मन के अर्न्तद्वन्द्व को उकेरा है। जिसमें नायिका रेखा अमेरिका की धरती पर कदम रखते हुए ही खुश हुई हैं। समय के साथ उसे महसूस होने लगता है कि उसका पति पूर्ण रूप से अमेरिकन बन चुका है और स्वार्थी भी होता जा रहा है। उसे ऐसा लगता है कि अपनी मन पसंद की चौखट उसे मिल ही नहीं पाएगी। इसलिए दूसरों के बनाए हुए साँचों में ढल और अपना नाप तौल भूलने से पहले वह

किस तरह से समझदारी और हिम्मत से फैसला लेती है, वह काबिले तारीफ है। कुल मिलाकर प्रवासी साहित्य में कथाकारों ने अपनी पारखी नजरों और पैनी कलम से स्त्री के संघर्ष, त्याग, साहस और बुद्धिमत्ता का ऐसा खाका खींचने का प्रयास किया है जिसमें देशी और विदेशी धरातल पर पाठकों को लाकर एक सवालिया निशान बनाया है। और उन्हें समाज में बदलाव लाने का न्यौता देने का काम कर रहे हैं।

देशी मिट्टी में देशी संस्कारों की सौंधी महक से सराबोर इन कहानियों से गुजरते हुए अपने देश अपनी मिट्टी और अपनी संस्कृति के प्रति आस्था और विश्वास में बढ़ोत्तरी होती है।

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथालेखन, डॉ. मधु सप्पु, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली
२. प्रवासी संसार, संपादक, श्री राकेश पाण्डेय, विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक — २००७
३. ब्रिटेन में हिन्दी, श्रीमती उषा राजे सक्सेना — २००५
४. वैश्विकता के संदर्भ में हिंदी, डॉ. शैलजा पाटील